नूपुर शर्मा मामले में उठते प्रश्न 6
मुस्लिम देश ने मंगाया गाय का गोबर 10
विश्व में संस्कृत के प्रति बढ़ रहा है आकर्षण 14

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक
पाथेय कण
₹10
www.patheykan.com
आषाढ़ शु.2, वि.2079, युगाब्द 5124, 1 जुलाई, 2022

फिर से स्थापित हो रहे हैं आस्था और आध्यात्मिक गौरव के केन्द्र

पावागढ़ ने दिखाया साम्प्रदायिक सौहार्द का मार्ग

गुजरात के पावागढ़ पहाड़ी पर स्थित काली माता मंदिर पर लहराती धर्म ध्वजा

patheykan@gmail.com
patheykan
@patheykan1

दूरभाष : 0141-2652509 ॐ e-mail : bssjpr@rediffmail.com

विद्या भारती संस्थान जयपुर

सेवाधाम, जवाहर नगर, सेक्टर-4, जयपुर-302004

जयपुर प्रान्त में विद्यालयों की संख्या 422

भैया-बहिनों की संख्या 86932

लक्ष्य 21 करोड़ धन संग्रह

◂ हमारे संस्कार - हमारे गौरव ▸

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा परिणाम -२०२२

द्वादशी → दशमी ↓

I (96.60%)	I (96.60%)	II (96.20%)	I (96.20%)	II (96.00%)	III (94.80%)	I (97.20%)
शुभम अग्रवाल (विज्ञान वर्ग) उ.मा.आ.वि.मं. रणजीत नगर भरतपुर	भव्या गौतम (विज्ञान वर्ग) बा. उ.मा.आ.वि.मं. मानटाउन सवाईमाधोपुर	रजत शर्मा (विज्ञान वर्ग) सोती उच्च माध्य. आदर्श वि.मं., चूरू	योगेश सोनी (वाणिज्य वर्ग) उ.मा.आ.वि.मं. रतनगढ़, चूरू	विशाल कृष्ण (वाणिज्य वर्ग) उ.मा.आ.वि.मं. रतनगढ़, चूरू	अर्जुन कृष्ण शर्मा (वाणिज्य वर्ग) उ.मा.आ.वि.मं. रतनगढ़, चूरू	अनुप्रिया नाथावत (कला वर्ग) श्रीमती मो.दे.गो.सि.स. बा.उ.बा.उ.मा. चूरू

I (98.67%)	II (98.33%)	II (98.33%)	III (98.17%)	IV (98.00%)	V (97.83%)	V (97.83%)	VI (97.67%)
खुशी सरावगी ब.च.स. उ.मा.आ.वि.मं. तारानगर, चूरू	स्नेहा सैनी ब.च.स. उ.मा.आ.वि.मं. तारानगर, चूरू	खुशबू जिंदल गुलकन्दी देवी उ.मा.आ.वि.मं. गंगापुरसिटी, स.मा.	आरूषि मित्तल माध्यमिक आ.वि.मं. भुसावर, भरतपुर	ईशा ब.च.स. उ.मा.आ.वि.मं. तारानगर, चूरू	अक्षिता प्रजापति मा.आ.वि.मं. महवा, दौसा	सोनाक्षी कंवर मा.आ.वि.मं. महवा, दौसा	राधिका शर्मा मा.आ.वि.मं. महवा, दौसा

VI (97.67%)	VI (97.67%)	VI (97.67%)	VII (97.50%)	VII (97.50%)	VIII (97.33%)	VIII (97.33%)	IX (97.17%)	IX (97.17%)
अंजली पहाड़िया मा.आ.वि.मं. गुढ़ाचन्द्र जी, करौली	नवीन अवाना मा.आ.वि.मं. गुढ़ाचन्द्र जी, करौली	राजेश स्वामी सोती उच्च माध्य. आ.वि.मं., चूरू	अर्पित कुमार गौयल मा.आ.वि.मं. महवा, दौसा	नितेश कुमार जैन उ.मा.आ.वि.मं. झोटवाड़ा, जयपुर	चिराग गुप्ता मा.आ.वि.मं. महवा, दौसा	गोरांशी जैन बा. उ.मा.आ.वि.मं. मानटाउन सवाईमाधोपुर	दिव्या शर्मा उ.मा.बा.आ.वि.मं. दौसा	विधि उपाध्याय मा.आ.वि.मं. महवा, दौसा

हमारे विद्यालयों में

- छोटे बालकों हेतु क्रिया एवं गतिविधि आधारित 12 व्यवस्थाओं से युक्त प्रभावी शिशुवाटिकाओं की व्यवस्था।

  (राष्ट्रीय शिक्षा नीति में (ECCE) प्रावधानों के अनुरूप)
- रोबोट प्रशिक्षण एवं विज्ञान मॉडल बनाने के लिये अटल टिंकरिंग लैब।
- विद्यालयों में श्रेष्ठ अनुशासन, चरित्र निर्माण एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा।
- अखिल भारतीय स्तर (SGFI) पर खेलकूद प्रतियोगिताओं में सहभागिता।
- सुसज्जित रसायन, भौतिक, जीव विज्ञान, भूगोल व कम्प्यूटर प्रयोगशालाएँ।
- Spoken English.

Holistic Development
समग्र विकास

हमारे गौरव पूर्व छात्र

IAS-IPS	45
RAS	213
Army Ser. (Above 2nd Lieutenant)	1320
Professor	437
Doctor	3995
IIT/NIT	7528
Business	17967
Industrialist	1935
Banking	1340
Journalist	47
Social ser.	4399

डॉ. विजय गोयल
अध्यक्ष
मो. 9829283794

An Alternative Model of National Education

शैलेन्द्र कुमार
मंत्री
मो. 7976128006

पाक्षिक
पाथेय कण

आषाढ़ शुक्ल 2 से
श्रावण कृ.2 तक
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

1-15 जुलाई, 2022
वर्ष 38 : अंक 07

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने की शिकायत हेतु सम्पर्क
(प्रातः10 से सायं 5 बजे तक)
मनीष शर्मा 9413645211
विज्ञापन हेतु सम्पर्क
ओमप्रकाश 9929722111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

भारत में 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे क्यों?

बीते 22 जून को जब असदुद्दीन ओवैसी झारखंड की राजधानी रांची के बिरसा मुंडा हवाई अड्डे पर जहाज से उतरे तो उनके स्वागत को आए समर्थकों ने 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगाए। भारत में ऐसे नारे कोई पहली बार नहीं लगे हैं।

मात्र एक माह पूर्व 22 मई, 2022 को झारखंड के ही शिलाडीह में पंचायत समिति सदस्य चुनी गई अमीना खातून के विजयी जुलूस में भी ऐसे नारे सुनाई दिए थे। 62 लोगों पर पुलिस ने मामला दर्ज किया। इन्हीं चुनावों में 12 अप्रैल,2022 को गिरिडीह जिले के गांडेय प्रखंड में प्रत्याशी मोहम्मद शाकिर हुसैन के जुलूस में 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगाए गए। वहां के कुछ लोगों का कहना था कि स्थानीय मदरसा में पाकिस्तान के गुणगान करने का पाठ पढ़ाया जाता है।

मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले में 20 अगस्त,2021 को मुहर्रम के मौके पर एक कार्यक्रम में ऐसे नारे लगाते हुए सात लोगों को पकड़ा गया। उत्तर प्रदेश में नोएडा के पिनगवां में सुल्तानपुर निवासी इरशाद का 27 अक्टूबर,2021 को एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें वह ऐसे नारे लगाते हुए भारत के प्रति अभद्र भाषा का प्रयोग करते दिखाई दे रहा था। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव के रोड शो में कई जगह 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगे। उत्तर प्रदेश के हंडिया विधानसभा क्षेत्र में सपा की चुनाव सभा में 8 फरवरी,2022 को ऐसे ही नारे लगाए गए।

असम के सांसद बदरुद्दीन अजमल के स्वागत में सिलचर में नवम्बर 2020 को, गुजरात में 26 दिसम्बर,2021 को कच्छ में पंचायत चुनाव के विजयी जुलूस में, छत्तीसगढ़ के भिलाई में कांग्रेसी पार्षद मन्नान गफ्फार खान व सलमान के विजयी जुलूस में, 22 मार्च, 2022 को मंगलौर के बसपा विधायक हाजी सरवत व करीम अंसारी की जनसभा में मंच से ऐसे नारे सुनाई दिए।

दिल्ली, लखनऊ व बेंगलूरू में सीएए और एनआरसी के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन में भी ऐसा ही हुआ था। बेंगलूरू में मंच पर एक छात्रा अमूल्या लियोन द्वारा पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा लगाने पर हुई उसकी गिरफ्तारी के विरुद्ध वामपंथियों सहित तथाकथित मानवाधिकारवादियों एवं सेक्युलरवादियों ने बड़ी हाय-तौबा मचाई थी। दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय तथा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में ऐसे नारे लगाए जाने की बात जग जाहिर है।

ये कुछ घटनाएं हाल ही के वर्षों की हैं। परन्तु 1947 में विभाजन के बाद से ही समय-समय पर पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा सुनाई देता रहा है। उदाहरण के लिए स्वाधीनता मिलने के मात्र एक वर्ष के अंदर 6 जुलाई,1948 को मुरादाबाद में एक दुकानदार अपने बर्तनों पर 'पाकिस्तान जिंदाबाद' खुदवाते समय पकड़ा गया। क्रिकेट में यदि भारत के विरुद्ध पाकिस्तान जीत रहा हो तो कई मुस्लिम युवाओं द्वारा खुशियां मनाने एवं ऐसे नारे लगाने के समाचार आते रहे हैं। (यहां तक कि 1983 में सीमित ओवर के भारत-वेस्टइंडीज के मैच में भारत के हारने पर कश्मीर के श्रीनगर स्टेडियम में लोगों ने खुशियां मनाई और पाक जिंदाबाद के नारे लगाए।)

सपा, बसपा, कांग्रेस, तृणमूल आदि के मुस्लिम प्रत्याशियों के चुनावों में विजयी होने पर ऐसे नारे लगाने के मायने क्या हैं? क्या नारे लगाने वालों के मन में यह विचार आता है कि भारत में मुस्लिम प्रत्याशी यदि जीत गया तो मानो पाकिस्तान ही जीत गया? या फिर वे इन मुस्लिम प्रत्याशियों में 'इस्लामी भारत' की छवि देखते हैं? जिन नेताओं के स्वागत में या विजयी जुलूस में ऐसे नारे लगते रहे हैं उन्होंने कभी भी अपने समर्थकों के इस कृत्य की भर्त्सना नहीं की, बल्कि ऐसे लोगों का बचाव ही करते दिखे। नेताओं की इस प्रवृत्ति के कारण जिनके मन में पाकिस्तान पल रहा है उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। ऐसी प्रवृत्ति के विरुद्ध मुसलमानों का कुछ नहीं बोलना उन्हें कटघरे में खड़ा करता है।

आज राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय मान-बिन्दुओं, राष्ट्रीय पर्वों को मस्जिद या मदरसों में सम्मान प्राप्त होना तो दूर की बात है, उनके अनेक मतावलंबी इनका विरोध करते दिखाई देते हैं। इसलिए उत्तर प्रदेश की सरकार को स्वाधीनता दिवस व गणतंत्र दिवस मनाने, तिरंगा फहराने तथा राष्ट्रगीत गायन के लिए मदरसों को न केवल आदेश देना पड़ा वरन् इसका वीडियो भी बतौर साक्ष्य भेजने के लिए कहना पड़ा।

हम मानकर चलते हैं कि आम मुसलमान भारत के साथ खड़ा है। कई मुसलमान सैनिकों व सैन्य अधिकारियों ने पाक के विरुद्ध युद्ध में वीरता दिखाते हुए अपना बलिदान भी दिया है। परन्तु, इस समाज के कई दिशा-भ्रमित युवा जब 'पाकिस्तान जिंदाबाद' का नारा लगाते हैं तो पूरे समाज के नेतृत्व को तथा समाज के पढ़े-लिखे लोगों को ऐसी घटनाओं की सार्वजनिक रूप से निंदा करनी चाहिए तथा ऐसे युवाओं को लताड़ा जाना चाहिए। जब भारत के साथ जिंदगी की डोर बांध ली है तो पाकिस्तान से प्रेम क्यों? ●

– रामस्वरूप अग्रवाल

फिर से स्थापित हो रहे हैं आस्था और आध्यात्मिक गौरव के केन्द्र

पावागढ़ ने दिखाया साम्प्रदायिक सौहार्द का मार्ग

गुजरात के पावागढ़ पहाड़ी पर स्थित काली माता के मंदिर का पुनर्विकास होकर मंदिर पर 500 वर्षों पश्चात् फहरी फिर से शिखर ध्वजा। गत 18 जून को प्रधानमंत्री मोदी के हाथों हुआ यह ऐतिहासिक कार्य।

गर्भगृह के ऊपर थी दरगाह

11वीं शताब्दी के इस मंदिर के शिखर को आक्रमणकारी महमूद बेगड़ा ने ध्वस्त कर दिया था। बाद में उस स्थान पर (यानि गर्भगृह के ऊपर) पीर सदनशाह की दरगाह बना दी गई। 52 शक्तिपीठों में से एक इस महाकाली मंदिर के लाखों भक्तों को मंदिर की यह दुरावस्था मन को कष्ट दे रही थी।

हुआ मैत्रीपूर्ण समझौता

कुछ समय पूर्व इस मंदिर के पुनर्विकास का कार्य शुरु किया गया। गर्भगृह के ऊपर बनी दरगाह का समाधान चुनौतिपूर्ण था। परन्तु दरगाह की देखरेख करने वालों के साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से दरगाह को मंदिर के पास स्थानांतरित करने का समझौता हुआ। समझौते के अंतर्गत दरगाह का भी पुनर्निर्माण किया गया। हिंदू और मुस्लिमों के बीच मैत्रीपूर्ण समझौते के चलते यह हुआ। मंदिर और दरगाह का पुनर्निर्माण अहमदाबाद के वास्तुकार आशीष सोमपुरा की देखरेख में हुआ। अयोध्या के राममंदिर का निर्माण कार्य भी इनके संरक्षण में हो रहा है।

आपसी सहमति से दरगाह को स्थानांतरित करते हुए मंदिर के साथ उसके भी पुनर्निर्माण का जो कार्य पावागढ़ में हुआ, वह पूरे देश में हिंदू आस्था केन्द्रों की पुनर्स्थापना को लेकर मुस्लिम पक्ष से हो रहे विवादों में दिशा देने वाला है।

मंदिर की यात्रा हुई सुगम

पावागढ़ की यात्रा अब तक इतनी कठिन थी कि लोग कहते थे कि जीवन में एक बार माता के दर्शन हो जाएं। 'रोप-वे' बनने के बाद यद्यपि मार्ग कुछ आसान हो गया था, फिर भी 250 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती थीं। अब वहां लिफ्ट लगा दी गई है। 125 करोड़ रुपयों की लागत से मंदिर का पुनर्विकास किया गया। मंदिर की सीढ़ियों को चौड़ा करने के साथ ही आसपास के क्षेत्र का सौंदर्यीकरण किया गया है। मंदिर और दरगाह दोनों में राजस्थान के बंसी पहाड़पुर के 3,600 क्यूबिक फीट लाल-बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया है।

500 वर्ष पश्चात् फहरी ध्वजा

माना जाता है कि मां सती के दाहिने पैर का अंगूठा पावागढ़ की पहाड़ी पर गिरा था।

तुकाराम महाराज शिला मंदिर

मुंबई स्थित चैत्यभूमि

काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर

उसी स्थान पर माता काली का मंदिर बनाया गया। 500 वर्षों के पश्चात् और भारत की स्वाधीनता के 75 वर्ष पश्चात् वहां फिर से बने गुबंद पर मंदिर की ध्वजा पुनः लहराई।

सांस्कृतिक स्वतंत्रता का कार्य

भारत की सांस्कृतिक स्वतंत्रता की जो शुरुआत सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सोमनाथ मंदिर का पुनर्विकास करके की थी उसे आगे बढ़ाने का कार्य वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कर रहे हैं।

आज अयोध्या में राम जन्मभूमि पर मंदिर बन रहा है। काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर और केदारनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण किया जा चुका है। चारधाम यात्रा का बुनियादी ढांचा विकसित किया गया है। भारत की आस्था और आध्यात्मिक गौरव के केंद्र फिर से स्थापित हो रहे हैं। पावागढ़ में मां काली मंदिर का पुनर्निर्माण इसी गौरव यात्रा का हिस्सा है।

संत तुकाराम का शिला मंदिर

चार दिन पूर्व श्री नरेन्द्र मोदी ने महाराष्ट्र में पुणे के देहू गांव में 'तुकाराम महाराज शिला मंदिर' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मोदी ने कहा कि यह शिलामंदिर न केवल भक्ति की शक्ति का केन्द्र है बल्कि भारत के सांस्कृतिक भविष्य को भी प्रशस्त करने वाला है। वहां संत शिरोमणि तुकाराम जी के 50 हजार से ज्यादा भक्त उपस्थित थे।

धार्मिक पैदल यात्रा के लिए मार्ग का निर्माण

महाराष्ट्र में संत ज्ञानेश्वर और संत तुकाराम के अनुयायी उनकी पालकी के साथ प्रतिवर्ष पैदल यात्रा करते हैं। उनकी यात्रा को सुगम बनाने के लिए 350 किमी से ज्यादा बड़े हाईवे बनाए जा रहे हैं जिनके साथ समर्पित पैदल मार्ग का निर्माण किया जाएगा ताकि पैदल पालकी यात्राएं सुगम हो सकें। इस कार्य में 11 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। इससे क्षेत्र के विकास को भी गति मिलेगी।

बाबा साहेब अंबेडकर के पंचतीर्थों का विकास

बाबा साहेब अंबेडकर से संबंधित पांच तीर्थों का विकास किया जा रहा है। इनमें सम्मिलित हैं बाबा साहेब का जन्म स्थान महू, लंदन का उनका निवास स्थान, मुंबई की चैत्यभूमि, दीक्षाभूमि तथा दिल्ली स्थित महानिर्वाण का ठिकाना

आज देशभर में तीर्थ स्थलों और पर्यटन स्थलों का विकास किया जा रहा है।

प्राचीन पहचान पर गर्व

प्रधानमंत्री मोदी ने पावागढ़ में मां काली के पुनर्विकसित मंदिर के उद्घाटन पर ठीक ही कहा कि ये पल हमें प्रेरणा और ऊर्जा देते हैं और हमारी महान संस्कृति एवं परंपरा के प्रति हमें समर्पित भाव से जीने के लिए प्रेरित करते हैं। **आज नया भारत अपनी आधुनिक आकांक्षाओं की पूर्ति के साथ-साथ अपनी प्राचीन पहचान को भी जी रहा है, उन पर गर्व कर रहा है।**

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए आज हमारा दायित्व है कि हम अपनी प्राचीन पहचान और परंपराओं को जीवित रखें। हम यह सुनिश्चित करें कि विकास और विरासत दोनों एक साथ आगे बढ़ें। (संपादक)

पावागढ़ में मोदी ने मां काली से मांगा यह आशीर्वाद

''मां मुझे आशीर्वाद दो कि मैं और अधिक ऊर्जा के साथ, और अधिक त्याग और समर्पण के साथ देश के जन-जन का सेवक बनकर उनकी सेवा करता रहूँ। मेरा जो सामर्थ्य है, मेरे जीवन में जो कुछ भी पुण्य है, वह मैं देश की माताओं-बहिनों के कल्याण के लिए, देश के लिए समर्पित करता हूँ।''

मोदी ने मां से देशवासियों की सुख-शांति और समृद्धि की भी कामना की तथा स्वर्णिम भारत के संकल्प की सिद्धि का आशीर्वाद मांगा।

दुर्लभ है संतों का सत्संग - मोदी

पुणे के देहू में 'संत तुकाराम शिला मंदिर' के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के उद्बोधन से कुछ अंश-

''मनुष्य जन्म में सबसे दुर्लभ है संतों का सत्संग। संतों की कृपा अनुभूति हो गई तो ईश्वर की अनुभूति अपने आप हो जाती है।''

''हमें गर्व है कि हम दुनिया की प्राचीनतम जीवित सभ्यताओं में से एक हैं। इसका श्रेय संत परंपरा को जाता है। भारत शाश्वत है क्योंकि भारत संतों की धरती है। हर युग में हमारे यहां देश और समाज को दिशा देने के लिए कोई न कोई महान आत्मा अवतरित होती रहती है।''

''छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे राष्ट्रनायक के जीवन में भी तुकाराम जी जैसे संतों ने बड़ी भूमिका निभाई है। आजादी की लड़ाई में वीर सावरकर जी को जब सजा हुई तब जेल में वे हथकड़ियों को चिपली (मजीरे) जैसा बजाते हुए तुकाराम जी के अभंग (भक्ति कविताएं) गाते थे।''

''संतों ने अलग-अलग स्थानों की यात्रा कर एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को जीवंत रखा।''

नूपुर शर्मा मामले में उठते प्रश्न

नूपुर शर्मा मामले में जिस तरह की हिंसक प्रतिक्रिया भारत के कई शहरों में जुमे(शुक्रवार) की नमाज के बाद हुई है उससे स्वाभाविक रूप से कुछ प्रश्न उठ खड़े हुए हैं। कहा जा रहा है कि नूपुर शर्मा ने एक टीवी डिबेट के दौरान इस्लाम मजहब और पैगंबर मोहम्मद का अपमान किया तथा उनके बयानों से दुनिया भर के मुसलमानों की भावनाओं को ठेस पहुँची। इस बयान के विरुद्ध अपना विरोध प्रकट करने के लिए कई शहरों में गत 3 जून और उसके बाद आने वाले शुक्रवारों को मस्जिद में जुमे की नमाज अदा कर बाहर निकले लोगों ने पत्थरबाजी, लूट और आगजनी की।

विधि शासन

देश के संविधान की दुहाई तथाकथित मुस्लिम नेतृत्व देता आया है। उसी संविधान और कानून के अनुसार किसी व्यक्ति द्वारा अपराध किए जाने पर उसके विरुद्ध पुलिस में शिकायत की जानी चाहिए। अपराध हुआ है या नहीं यह न्यायालय को तय करने दें। आरोपी के विरुद्ध 'सर तन से जुदा' जैसी घोषणा करने से क्या संविधान की पालना हो पाएगी?

नूपुर शर्मा का पक्ष

इस प्रकरण में टीवी चैनल एबीपी न्यूज की संवाददाता ने नूपुर शर्मा से बातचीत की थी। इस बातचीत का वीडियो यू-ट्यूब पर (लिंक : https://www.youtube.com/watch?v=_WlgWvWSgos) उपलब्ध है। इस बातचीत में नूपुर शर्मा कहती हैं कि जिस टीवी बहस की यह घटना है वहां उपस्थित मुस्लिम वक्ता द्वारा ज्ञानवापी से निकले शिवलिंग के संबंध में अभद्र टिप्पणी की जा रही थी तो मैंने उसके जवाब में जो कुछ कहा (जिसे इस्लाम और पैगंबर के संबंध में आपत्तिजनक बताया गया) वह इस्लाम की पुस्तकों में पढ़कर ही मैंने बोला था। नूपुर कहती है कि कोई भी वरिष्ठ इस्लामी विद्वान यह स्पष्ट रूप से बता दे कि जो कुछ उसने बोला है वह इस्लामी मजहबी पुस्तकों (हदीस) में लिखा हुआ नहीं है तो वे अपने शब्द वापस ले लेंगी।

पश्चिम बंगाल में हिंसा

जाकिर नाइक ने भी यही कहा था

नूपुर इस्लामी प्रचारक जाकिर नाइक का एक वीडियो भी इस बातचीत में सुनाती है, जिसमें जाकिर नाइक वही बातें बोलते दिखाई दे रहे हैं जो नूपुर ने बोली थी। तो फिर बात बिगड़ी कैसे? नूपुर कहती हैं कि कोई मोहम्मद जुबेर है जो अपने को फैक्ट चैकर्स (तथ्य जांचकर्ता) बताते हैं, जिसने मेरे कथन को बहुत ज्यादा एडिट (संपादित) करते हुए एक भ्रामक वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड (जारी) कर दिया, जिससे भ्रम फैला कि मैंने इस्लाम और पैगंबर साहब के संबंध में कुछ आपत्तिजनक बोला। वह यह भी कहती हैं कि वह स्वयं सभी धर्मों का आदर करती हैं, फिर भी किसी की भावना को ठेस पहुँची तो वह माफी चाहती है।

धमकियां और गालियां

इस बातचीत वाले वीडियो में नूपुर शर्मा कह रही हैं कि उसे (बातचीत करने के दिन तक) कोई 70 हजार से ज्यादा धमकियों भरे मैसेज (संदेश) भेजे गए हैं। (नूपुर को इन मैसेजों में जो गालियां दी गई हैं वह सभ्य समाज में बोलने-सुनाने लायक नहीं हैं। परन्तु इन्हें स्वयं नूपुर शर्मा ने सार्वजनिक रूप से बताया है तो हम उन्हें यहाँ लिख रहे हैं- संपादक) नूपुर ने एबीपी की संवाददाता को बताया कि उसे जो मैसेज किए गए उनमें लिखा है कि उसकी मां के साथ सामूहिक दुष्कर्म हुआ था तब वह (यानि नूपुर) पैदा हुई थी और अब नूपुर और उसकी बहिन के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया जाएगा। इन मैसेज में हिंदुओं के भगवान कृष्ण को बलात्कारी तक बताया गया है। क्या मुस्लिम समाज के पढ़े-लिखे और प्रजातंत्र तथा 'कानून के राज' में विश्वास करने वाले कुछ लोग आगे आएंगे और इन संदेशों की भर्त्सना करेंगे?

जांच आवश्यक

क्या यह उचित नहीं होगा कि इस पूरे मामले पर कोई 'जांच समिति' बनाई जाए जिसमें मुस्लिम विद्वान भी रहें? क्योंकि मोहम्मद जुबेर द्वारा बनाए गए भ्रामक वीडियो (जैसा कि नूपुर कहती हैं) के कारण जो भ्रम फैला, उसी के चलते विश्व के कई मुस्लिम देशों ने अपना विरोध भारत सरकार को दर्ज कराया है। इसलिए इस पूरे मामले में जांच होकर सत्य बात सामने आनी ही चाहिए ताकि जो वैमनस्य और हिंसा का माहौल बना है उसमें सुधार हो सके।

हिंसा के पीछे कौन है?

प्रश्न यह भी है कि क्या धार्मिक भावनाओं की आड़ में दंगे फैला कर किसी संगठन या किन्हीं अराजक तत्वों द्वारा सामाजिक सौहार्द को जानबूझकर किसी साजिश के अंतर्गत बिगाड़ा जा रहा है, जैसा कि कानपुर, मुरादाबाद, प्रयागराज, रांची, मालदा (प.बंगाल) आदि शहरों में देखने में आया?

प्रश्न यह है कि मस्जिदों में शुक्रवार की सामूहिक नमाज के बाद ही हिंसा क्यों भड़क रही है? क्या मस्जिदों में इस संबंध में कोई भाषण या बयान दिया जाता है? जानकारों के अनुसार सहारनपुर में सामान्यतया जुमे की नमाज के समय वहां की जामा-मस्जिद में 4-5 हजार मुसलमान रहते हैं परन्तु, बताते हैं कि, उस दिन (10 जून, शुक्रवार को) तीन गुना ज्यादा भीड़ नमाज के समय थी। तो क्या किसी संगठन या लोगों की योजना थी वहां इतनी भीड़ एकत्र कर हिंसा फैलाने की? बताते हैं कि वहां वॉट्सएप और सोशल मीडिया पर इस तरह के संदेश भेजे गए थे।

10 जून को जामा मस्जिद के आसपास रेहड़ी और ठेला लगाने वाले गायब थे तथा मुसलमानों की दुकानें भी बंद थीं। ऐसा कैसे हुआ? क्या इन रेहड़ी, ठेला व मुस्लिम दुकानदारों को हिंसा फैलाने की योजना की जानकारी थी?

भीड़ द्वारा की गई लूट का शिकार हिंदू दुकानदारों को ही होना था। नेहरु मार्केट स्थित धर्मेन्द्र भूटानी के क्रॉकरी स्टोर व अन्य दुकानों में तोड़फोड़ व लूट हुई। दुकानदारों का कहना था कि भीड़ के निशाने पर मोबाइल मार्केट था। भास्कर संवाददाता से बात करते हुए व्यापार मंडल के अध्यक्ष संजीव कक्कड़ ने कहा कि 'भीड़ में युवाओं का एक समूह साजिश के अंतर्गत आया था, उसी ने हमला किया।'

सरकार की कार्रवाई

गोरखपुर के कई इलाकों में ड्रोन से पुलिस ने निगरानी कराई तो 54 घरों की छतों पर ईंट-पत्थर मिले। यही स्थिति प्रयागराज में हिंसा के बाद मिली। 31 ट्रकों में पत्थर, चप्पल और कचरा निकला था। कानपुर, मुरादाबाद, देवबंद, आदि जगहों में छतों पर ईंट-पत्थर रखने वालों को पुलिस ने नोटिस भेजे हैं।

झारखंड की राजधानी रांची में 10 जून को हिंसा हुई। हिंसा की घटना में प्रतिबंधित मुस्लिम संगठन पीएफआई (पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया) की संलग्नता भी बताई जा रही है। पुलिस की जांच में सामने आया है कि 10 जून की हिंसा के दौरान बाहर से कुछ लोग रांची आए थे। प्रदर्शन के दौरान पीएफआई के राजनैतिक संगठन एसडीपीआई के झंडे भी लहराए गए थे।

भयग्रस्त दंगाई

जहां-जहां भी हिंसा हुई है, वहां बड़ी संख्या में हुड़दंगी गिरफ्तार किए गए हैं। वीडियो एवं सीसीटीवी के माध्यम से दंगाइयों की पहचान की जा रही है। कई उपद्रवियों के घरों पर उत्तर प्रदेश में बुलडोजर चलाया गया। उत्तर प्रदेश में बुलडोजर कार्रवाई के कारण तथा इस घोषणा के कारण कि सार्वजनिक संपत्ति को हुई क्षति की भरपाई दंगाइयों से या उनकी संपत्तियों से कराई जाएगी, दंगाइयों के घरों में खौफ दिखाई दे रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार ऐसे लोगों के परिवार वाले मीडिया या किसी भी बाहरी व्यक्ति तक से बात करते हुए डर रहे हैं।

समाज को निशाना क्यों?

प्रश्न यह भी है कि मामला एक या दो व्यक्तियों द्वारा किए गए तथाकथित अपराध के लिए हिंदू समाज को हिंसा का निशाना क्यों बनाया जा रहा है? प्रश्न बहुत से हैं जिनके उत्तर हमें ढूंढने हैं।

(संपादक)

देश भर में लाखों हिंदू उतरे सड़कों पर
कहा- हिंदू बेटी है नूपुर, उसे अकेला नहीं छोड़ेंगे

16 जून को देशभर के नगरों-शहरों में लाखों हिंदू सड़क पर उतरे। राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपकर मांग की कि जुमे के दिन जो हिंसा की जा रही है उसे तत्काल रोका जाए और नूपुर शर्मा के विरुद्ध जिस तरह की हिंसात्मक बातें की जा रही हैं, ऐसी बातें करने वालों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए।

राजस्थान में सकल हिंदू समाज के बैनर तले अजमेर, अलवर, कोटपूतली, किशनगढ़, नैनवा, बूंदी सहित अनेक स्थानों पर हिंदू समाज के हजारों लोगों ने सड़कों पर उतर कर जिहाद के खिलाफ नारे लगाए। हिंदू समाज व पुलिस प्रशासन को खुलेआम धमकी देने वाले मौलाना मुफ्ती नदीम सहित अन्य लोगों को गिरफ्तार नहीं करने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी भी दी गई।

कानपुर सहित उत्तर प्रदेश के सभी शहरों में भी हजारों हिंदू सड़क पर उतरे और पत्थरबाजो होश में आओ, जैसे नारे लगाए। प्रदर्शन के साथ हनुमान चालीसा का पाठ किया। कार्यकर्ताओं ने कहा कि नूपुर शर्मा हिंदू बेटी है, उसे अकेला नहीं छोड़ सकते। नूपुर शर्मा व उसके परिवार को जिस तरह से जान से मारने की धमकियां दी जा रही हैं, ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया जाए।

पाकिस्तान के मौलाना ने किया नूपुर शर्मा का समर्थन

पाकिस्तान के एक मौलाना इंजीनियर मोहम्मद अली ने नूपुर शर्मा का खुलकर समर्थन किया है। उनका कहना है कि टीवी बहस में मुस्लिम पैनलिस्ट(प्रवक्ता) ने नूपुर शर्मा को पहले भड़काया। इसके जवाब में नूपुर ने टिप्पणी की थी। मौलाना का कहना था कि पहला अपराधी वह मुसलमान है जिसने दूसरे के धर्म पर टिप्पणी की।

किशनगढ़ में सकल हिंदू समाज के 10 हजार से ज्यादा लोग नूपुर शर्मा के समर्थन में तिरंगा रैली निकालते हुए

देवी-देवताओं के अपमान और नूपुर शर्मा को दी जा रही धमकियों के विरोध में

अजमेर में 50 हजार हिंदुओं का ऐतिहासिक प्रदर्शन

भारत वर्ष की सनातन संस्कृति को खंडित करने के षड्यंत्रों, हिंदू देवी-देवताओं का अपमान, सुनियोजित आगजनी व पथराव, धार्मिक उन्माद तथा हिंदू बेटी नूपुर शर्मा को दी जा रही धममियों के विरोध में सकल हिंदू समाज द्वारा बीती 26 जून को अजमेर में ऐतिहासिक मार्च निकाला गया। प्रदर्शन में अपार जनसमूह उमड़ा। सड़कें हिंदुओं से अटी पड़ी थीं। अजमेर के वरिष्ठ पत्रकार तथा ब्लॉगर एसपी मित्तल ने लिखा है, '' यदि बाजारों में स्वागत करने वालों की संख्या भी जोड़ ली जाए तो ऐतिहासिक एकता के प्रदर्शन में सनातनियों (सकल हिंदुओं) की संख्या 50 हजार के पार हो जाएगी।'' हजारों युवा सिर पर केसरिया साफा बांध कर प्रदर्शन में सम्मिलित हुए।

प्रदर्शन में शामिल संत-महात्माओं और हिंदू समाज के प्रतिनिधियों ने राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन जिलाधीश को सौंपा। ज्ञापन में कट्टरवादियों व जिहादियों के विरूद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की गई।

आपणी बातां

राजस्थान की अपनी भाषा में संवाद एवं विचार-अभिव्यक्ति

घुळमिल समाज

(रेखांकित शब्दों का अर्थ अंत में दिया गया है)

● डॉ. भँवर कसाना

तोड़णो कितो सोरो काम है। जोड़णो ई दोरो है। अेक छोटी सी अबकी बात भायां-भायां नै बांट दैवे। कैयां नै तोड़ण मांय मजो आवै। कैई घाती निजरां इणी काम मांय लाग्योड़ी रैवे। माठ-मिजाज सूं जीवण जीवतो अर सगळा रो भलो चावणियो चायै परिवार हो चायै समाज कैयां रै काळजै खटकै। आपणै हिन्दू समाज रै अलावा जगती मांय इस्यो कुणसो समाज है जिको आखै जगत अर ब्रह्माण्ड रो भलो सोचै। इण रै धरम अर संस्कृति री अेक-अेक बात अेक-अेक किरतब मांय परोपकार रो भाव है।

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' रो भाव बीजी जगां कठै है ? पण फैरूं ई इण समाज नै खंड-खंड करण री तजबीजां लारलै कैई सालां सूं चाल रिवी है। कैई कुटळी लाग्योड़ा है। यवनां री आंध्यां रा गोटां मांय लड़ती, भिड़ती, मरती, खपती आपणै धरम री कैई धारावां ओटळीजी उणारो तो आखो इतिहास आपां नै ठाह है, पण अबार ई किस्यो पूरो जापतो है। धरम बदळाव, जात-जात मांय राड़, किणी नै पुचकारणो तो किणी नै भिड़कावणो जिस्या कारज करती कैई कुटळी ताकतां आज ई लाग्योड़ी है।

हालांकै आ बात अलग है कै आं री कुटळायां रो जापतो करण सारू धरम रखोप टोळियां आज ई लाग्योड़ी है तो पैली ई लाग्योड़ी ही। सांची बात तो आ है कै अे कुटळी ताकतां आपणै धरम री उणी ठौड़ां वार करै जठै कोई तरेड़ देखे। जात-पांत, ऊँच-नीच, छूत-अछूत, भासा-छेत्र रा भांत-भंतिला भेदभाव आपणै समाज री तरेड़ां है। जिणा रै मारफत अे कुटळी मांय बड़ै। आं तरेड़ां नै अपणायत रै गारै सूं भरण री जिम्मेदारी आज आपां सगळां री है।

हिन्दू समाज री मूळ सनातन परम्परा मांय तो नीं कोई ऊँचो-नीचो, नीं कोई छोटो-बडो अर नीं कोई छूत-अछूत है। पछै आपां आं रो पूंछड़ो पकड़्यां क्यूं बैठ्या हां ? रामानंद, कबीर, पीपा, दादू, दरियाव जिस्या कैई संत इण बात री साख भरता थकां लोगां नै चैताया है। इणी भांत बाबा रामदेव, जम्भनाथ, पाबूजी जिस्या कैई लोक देवता बखत-बखत माथै हिन्दू समाज रै रखोप-कवच नै मजबूत करियो है। बे आपरो काज करियो अबै आपणी बारी। अपणै आप रै हिन्दू होवण माथै गुरब राखणियां हरैक नै घुळमिल (समरस) हिन्दू समाज रै वास्तै बीड़ो उठायर काज करण री जुरत है। आपां जठै ई ऊबा हां बठै आं मांय सूं कोई तरेड़ निंगै नीं आवै। इण संकल्प रै सागै ऊबां होयां आपां आं सगळी अबखायां नै ठीक कर सकां।

(लेखक राजस्थानी भाषा के साहित्यकार हैं)

शब्दार्थ- सोरो- सरल, **दोरो-** मुश्किल, **कैयां नै** - कइयों को, **आखै-** सम्पूर्ण, **बीजी**-दूसरी, **तजबीजां-** तरीके, **लारलै-** पिछले, **राड़-** झगड़ा, **ठाह-** जानकारी, **किणी**-किसी को, **कुटली-** दुष्ट, **तरेड़**-दरार, **पछै**-फिर भी, **नीं**-नहीं, **गुरब**-गौरव, **अबखायां-** कमियां

बाल गंगाधर तिलक

जिन्होंने कहा था–

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा"

● कुसुम शर्मा

व्यापक जन समर्थन के फलस्वरूप 'लोकमान्य' की उपाधि से विभूषित, गीता रहस्य जैसी पुस्तकों के लेखक, महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक स्वराज्य के उद्घोषक और स्वदेशी आंदोलन के प्रणेता थे।

शिक्षा और पत्रकारिता से जागरण

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का प्रथम रुझान शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र जागृति एवं देशभक्ति की चेतना जागृत करना रहा। उन्होंने 1880 में पुणे में न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की। आप फर्ग्युसन कॉलेज के प्रिंसिपल रहे। तिलक जी ने प्लेग की महामारी से बचाव के लिए हिंदू प्लेग अस्पताल खोला। उन्होंने राजनीतिक चेतना, समाज सुधार एवं देश प्रेम की भावना को जागृत करने के लिए 1881 में दो पत्रिकाओं का संपादन किया। 'मराठा' साप्ताहिक अंग्रेजी भाषा की पत्रिका थी जो महाराष्ट्र के बाहर के प्रांतों में जाती थी जबकि 'केसरी' मराठी भाषा की दैनिक पत्रिका थी जिसमें सरकार की योजना व नीतियों की पोल खोली जाती थी।

स्वतंत्रता अधिकारपूर्वक लेनी होगी

तिलक जी आरंभ से ही कांग्रेस से जुड़ गए थे। बाल गंगाधर तिलक की विचारधारा थी कि स्वतंत्रता भीख मांगने की वस्तु नहीं है वरन् इसे अधिकार पूर्वक छीनने की आवश्यकता है। कांग्रेस अंग्रेजों के न्याय सिद्धांत और विचारधारा पर विश्वास करती थी, वे अपनी बात पहले प्रार्थनापत्र,फिर स्मरण पत्र और फिर प्रतिनिधिमंडल के द्वारा मनवाने का प्रयास करते थे जिसे तिलकजी ने राजनीतिक क्षेत्र में भिक्षावृत्ति की संज्ञा दी।

गणेश महोत्सव का आरंभ

उन्होंने एक बात यह भी महसूस की कि धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से देशवासियों को राष्ट्रवाद समझाया जा सकता है क्योंकि भारत एक धर्म प्रधान राष्ट्र है। इसके चलते उन्होंने 1893 में गणेश महोत्सव और 1895 में शिवाजी महोत्सव प्रारंभ किए जो कि हर साल मनाये जाने लगे। इन उत्सवों की तुलना स्वयं तिलक जी ने यूनानी राष्ट्रीय खेलों से की थी। इसके अलावा उन्होंने लाठी क्लब, दंगल आदि से भी लोगों को जोड़ने की कोशिश की ।

जेलयात्रा एवं लेखन

1908 में तिलक जी को, अंग्रेज सरकार के विरुद्ध संघर्ष के लिए राजद्रोह का मामला दर्ज कर, 6 वर्ष की सजा दी गई तथा ब्रह्मदेश (आज का म्यांमार) के मांडले जेल में रखा गया। वहां जेल में ही उन्होंने 'गीता' का गहन अध्ययन कर 'गीता रहस्य' पुस्तक लिखी।

लाल–बाल–पाल

पुणे में प्लेग जांच दौरान जांच अधिकारियों द्वारा महिलाओं के साथ अभद्रता का मामला सामने आया। इस पर तिलक जी ने केसरी में अपना विरोध प्रदर्शित किया और इसी के चलते 'शिवाजी के उद्गार' नामक कविता छापी। इस अपराध में तिलक जी को 18 वर्ष की जेल की सजा सुनाई गई। इससे उनकी लोकप्रियता चरम उत्कर्ष पर पहुंच गई जिसके कारण उन्हें 1898 में ही रिहा करना पड़ा। गरमपंथी विचारधारा के नेता के रूप में तीन व्यक्तित्व जुड़ कर सामने आए जिन्हें लाल बाल पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल) के नाम से जाना जाता है।

बंग–भंग आंदोलन

1905 में लॉर्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर दिया, जिसके विरोध में बंगाल की आम जनता ने आंदोलन शुरू किया जिसे बंग–भंग आंदोलन के नाम से जाना जाता है। तिलक जी के हाथों में आकर यह आंदोलन क्षेत्रीय आंदोलन न रहकर व्यापक तौर पर एक स्वदेशी आंदोलन के रूप में सामने आया जिससे स्वदेशी, स्वराज, राष्ट्रीय शिक्षा और बहिष्कार जैसे व्यापक मुद्दों को पूरे भारत में फैलाने का कार्य हुआ।

स्वराज का अर्थ

स्वराज शब्द के प्रणेता बाल गंगाधर तिलक को माना जाता है। 'स्वराज' शब्द को लेकर जब एक पत्रकार ने पूछा कि आपके इस स्वदेशी आंदोलन का अर्थ क्या है? तो तिलक जी ने जवाब दिया यह एक व्यापक अवधारणा है। स्वदेशी का पहला अर्थ राजनीतिक स्वराज की स्थापना करना है। स्वदेशी का अन्य अर्थ है स्वदेशी उद्योगों की स्थापना करना तथा अन्यतम अर्थ भारतीय संस्कृति, कला ,साहित्य, धर्म के क्षेत्र में स्वयं को पहचानना और इन सबको एक दूसरे के लिए पूरक बनाना है। उन्होंने कहा कि स्वदेशी आंदोलन स्वराज है जिसका अर्थ है विदेशी शासन का बहिष्कार करना। हम स्वदेशी को तभी अपना पाएंगे जब हम विदेशी का बहिष्कार करेंगे।

तिलक जी ने एनी बेसेंट के साथ मिलकर 1916 में होम रूल लीग की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारत में स्वराज स्थापित करना था। वे कहा करते थे कि ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।''

1 अगस्त, 1920 को बम्बई (आज की मुंबई) में उनका निधन हो गया ●

एक मुस्लिम देश ने भारत से मंगाया गाय का गोबर

जैविक खाद और गो-उत्पाद का महत्व व उपयोगिता अब विदेश में भी स्वीकार की जा रही है। कृषि वैज्ञानिकों ने देशी गाय के गोबर पर शोध करने के बाद पाया कि इसके प्रयोग से न केवल फसल उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है, बल्कि इससे निर्मित उत्पादों का उपयोग करने से गंभीर बीमारियों से भी बचा जा सकता है।

यही कारण है कि मुस्लिम देश कुवैत से पहली बार भारत को देशी गाय के 192 मीट्रिक टन यानि 1 लाख 92 हजार किलो गोबर के निर्यात का आर्डर मिला है। यह आर्डर जयपुर की टोंक रोड स्थित 'श्री पिंजरापोल गौशाला' से पूरा किया जाएगा। सनराइज एग्रीलैंड डवलपमेंट एण्ड रिसर्च प्रा.लि. के माध्यम से देशी गाय के गोबर की पहली खेप बीती 15 जून को भेजी गई।

यह सब संभव हुआ है 'भारतीय जैविक किसान उत्पादक संघ' के माध्यम से देश भर में चलाए जा रहे 'जैविक खेती मिशन' अभियान के कारण। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अतुल गुप्ता ने बताया कि गाय के गोबर के कंटेनर ट्रेन से गुजरात और वहां से जलयान के माध्यम से कुवैत के लिए रवाना होंगे।

कहाँ होगा उपयोग

कुवैत के कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार भारतीय देशी गाय के गोबर का बुरादा खजूर की फसल में प्रयोग करने पर उसके आकार व उत्पादन में बढ़ोत्तरी देखी गयी है। उन्होंने यह भी पाया कि फसलों में पेस्टीसाइड (कीटनाशक) का असर भारतीय देशी गाय के गोबर से ही दूर किया जा सकता है। इसके बाद कुवैत की 'लैमोर कम्पनी' ने यह आर्डर भारत को दिया है।

गोबर ऊर्जा का स्रोत

श्री पिंजरापोल गोशाला के महामंत्री श्री शिवरतन चितलांगिया ने बताया कि भारत में मवेशियों की संख्या लगभग 30 करोड़ है। इनसे प्रतिदिन लगभग 30 लाख टन गोबर मिलता है। इनमें से 3 प्रतिशत को उपला (कंडे) बनाकर जला दिया जाता है। जहां ब्रिटेन में गोबर गैस से हर साल 16 लाख यूनिट बिजली का उत्पादन होता हैं, वहीं चीन में डेढ़ करोड़ परिवारों को घरेलू ऊर्जा के लिए गोबर गैस की आपूर्ति की जाती है।

कृषि क्षेत्र में जैविक खाद की मांग निरन्तर बढ़ रही है। यही कारण है कि कई देश जैविक खाद (वर्मी-कम्पोस्ट) के साथ-साथ गाय का गोबर भी भारत से आयात करने लगे हैं। फिलहाल अमेरिका, नेपाल, केन्या तथा फिलिपींस ने भारत से लाखों टन जैविक खाद मंगवाना शुरू किया है।

जानकारी हो कि भारत पशु उत्पादों में मांस, मुर्गी, पशु खालें, दूध, दूध-उत्पाद तथा शहद आदि का पहले से निर्यात कर रहा है। लेकिन अब देशी गाय के गौमूत्र व गोबर से निर्मित उत्पादों का भी निर्यात होने लगा है।

पर्यावरण तभी अच्छा होगा, जब व्यक्ति के अंदर से इसे अच्छा करने की आवाज उठेगी

श्री गोपाल आर्य को सम्मानित करते हुए पांचजन्य के संपादक हितेश शंकर तथा भारत प्रकाशन के प्रबंध निदेशक भारत भूषण अरोड़ा

पर्यावरण को समझने के लिए पंचतत्व को समझना जरूरी है। पंचतत्व की शुरुआत पंच महाभूत से होती है। पंच महाभूत में जीवन है और जहां ये हैं, वहीं जीवन है। जीवन की पहली से अंतिम सांस तक की यात्रा है पर्यावरण। पर्यावरण तभी अच्छा होगा, जब व्यक्ति के अंदर से इसे अच्छा करने की आवाज उठेगी। यह बात भारत प्रकाशन, दिल्ली द्वारा आयोजित पर्यावरण संवाद कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के अ.भा.संयोजक श्री गोपाल आर्य ने कही।

उन्होंने कहा कि मनुष्य की सृष्टि में भागीदारी 0.01 प्रतिशत है। आज हमें जीवन जीने का तरीका बदलना होगा। भारत में एक मिनट में 10 लाख प्लास्टिक की बोतलें बनती हैं। विरोध नहीं, विकल्प की आवश्यकता है, समाधान की जरूरत है। एक पेड़ जब तक जिंदा रहेगा तब तक लकड़ियां देता रहेगा। प्रति इंसान 2200 पेड़ चाहिए, जबकि डब्ल्यूएचओ के अनुसार केवल 28 पेड़ प्रति व्यक्ति हैं। सुजलाम-सुफलाम की बात करने वाले देश की प्रकृति आज कहां पहुंच गई, यह सोचना होगा। पूरे देश में चार संकट है। उद्देश्य, प्रामाणिकता, संबंधों व जीवनचर्या में बदलाव का संकट।

घर के प्रत्येक कार्य में रसायन प्रयुक्त हो रहा है। देश में प्रतिदिन सौ हजार मीट्रिक टन रसायन प्रयुक्त हो रहा है। इसकी चिंता करनी होगी। मेरा घर, मेरा आंतरिक पर्यावरण ठीक करने की चिंता करनी होगी।

आर्य ने यह भी कहा कि एक यूनिट बिजली के लिए 875 ग्राम कोयला लगता है। कोयला बनने में एक लाख साल लगते हैं। हमें एक-एक यूनिट बिजली बचानी होगी। वैश्विक पर्यावरण समस्या का समाधान कोई है तो वह है व्यक्ति। विकास की अवधारणा को ऊर्जा रेखित करना होगा। क्या हमारा विकास इस संसार को बचाने की चिंता कर रहा है? इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

जानकारी हो कि 'पर्यावरण संरक्षण गतिविधि' आयाम के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण हेतु समाज जागरण किया जा रहा है। पेड़ बचाओ, पानी बचाओ व पॉलीथीन हटाओ की मुहीम चलाकर देशभर में समाज के सहयोग से निरंतर प्रयासरत यह एक राष्ट्रीय पहल है।

राष्ट्र सेवा के साथ व्यसन मुक्ति का संकल्प लेकर 14 जोड़े बने हमसफर

समाज में समरसता का वातावरण बने इसके लिए सेवा कार्यों में अग्रणी रहने वाली संस्था 'सेवा भारती' के द्वारा अनेकों स्थानों पर सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में बीती 20 जून को भीलवाड़ा में आयोजित विवाह सम्मेलन में 14 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। सभी जोड़ों ने गौ माता को साक्षी मानकर अग्नि के समक्ष फेरे लेते हुए व्यसन मुक्ति और राष्ट्र सेवा का संकल्प भी लिया। संस्था की ओर से नव-दम्पत्तियों को घरेलू सामानों के साथ ही तुलसी का गमला भी भेंट किया गया । हरिशेवा धाम के महामंडलेश्वर हंसराम उदासी महाराज सहित समाज के प्रबुद्धजनों ने वर-वधुओं को आशीर्वाद दिया।

सवाईमाधोपुर

सवाईमाधोपुर में भी 9 जून को अलग-अलग समाजों के 5 जोड़ों ने अग्नि के समक्ष फेरे लेकर गृहस्थ जीवन की शुरुआत की।

संत देवानंद गिरि महाराज, विष्णु दासजी महाराज ने सभी जोड़ों को सफल गृहस्थ जीवन के लिए आशीर्वाद प्रदान किया।

कुकिंग टिप्स

मठरी बनाते समय राई को तेल में तड़का कर मठरी के आटे को गूंथें, इससे मठरियां स्वादिष्ट व लाजवाब बनेंगी।

राजपुरोहित समाज की अनूठी पहल

मेघवाल समाज के दूल्हे की निकली बिंदोरी, नेग भी दिया

दलित समुदाय के दूल्हे को घोड़ी से उतारने की खबरें अक्सर समाचार पत्रों की मोटी हेडलाइन बनती रही हैं लेकिन अब इस स्थिति में काफी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। ऐसा ही उदाहरण पाली के एक गांव में देखने को मिला, जहां दलित समाज के दूल्हे को घोड़ी पर बिठाकर उसकी बिंदोरी निकाली गई।

निम्बाड़ा (पाली) के राजपुरोहित समाज के लोगों ने बीती 12 जून को मेघवाल समाज के उत्तम कटारिया को घोड़ी पर बिठाकर, माला पहनाकर एवं नेग के रूपए देकर गाजे-बाजे के साथ बिंदोरी निकाली। राजपुरोहित समाज की अगुवाई में दूल्हे का स्वागत-सत्कार किया गया। गांव में हुए इस बदलाव को देखकर ग्रामवासियों की आंखों में खुशी के आंसू थे। दूल्हा बने उत्तम कटारिया की बिंदोरी में गांव के उप-सरपंच बलवंत सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता इंद्रसिंह सहित गांव के अन्य समाजों के लोग भी बड़ी संख्या में शामिल थे।

भोपा समाज के बच्चों को पढ़ा रहे एसडीआरएफ के जवान

जयपुर से 45 किलोमीटर दूर **गाड़ोता** में बने एसडीआरएफ (राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल) मुख्यालय के आस-पास भोपा समाज के लगभग 15 परिवार रहते हैं। परिवार के सभी लोग मजदूरी कर अपना जीवन-यापन करते हैं। बच्चों का भविष्य बनाने और शिक्षा से जोड़ने के लिए आईपीएस श्री पंकज चौधरी ने पहल करते हुए कैम्पस में एक पाठशाला और क्रेच (शिशु गृह) खोला है। जहां एसडीआरएफ का एक जवान इन 35 बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा दे रहा है। प्रतिदिन बच्चों को सुबह 9 बजे से 10 बजे तक (एक घंटा) सभी विषय पढ़ाए जाते हैं। पंकज चौधरी ने बताया कि एसडीआरएफ राजस्थान के जरूरतमंदों का भी सहारा बने इसी उद्देश्य से इन बच्चों को साक्षर किया जा रहा है। जिससे ये बच्चे शिक्षा का महत्व समझें और पढ़ाई कर समाज की मुख्यधारा में शामिल हों।

राजपूत भाइयों ने मेघवाल समाज की दो बेटियों का करवाया विवाह

पिता की परम्परा का किया निर्वाह

धनला (पाली) गांव के चार राजपूत भाइयों ने मिलकर मेघवाल समाज की दो बच्चियों का विवाह करवाया। विवाह समारोह में पूरा गांव शामिल हुआ। विवाह को यादगार बनाने के लिए पूरा गांव सजाया गया था। सभी ने नव-दम्पत्तियों को आशीर्वाद दिया। कुशाल सिंह, देवेन्द्र सिंह, खुशवीर सिंह व तेजपाल ने अपने पिता स्व.प्रेमसिंह जो कि अपने जीवन काल में भी सामाजिक भेदभाव को खत्म करने के लिए प्रयासरत थे, की परम्परा का निर्वाह करते हुए बड़े धूमधाम से विवाह सम्पन्न करवाया।

योग दिवस पर शिविर

क्रीड़ा भारती के प्रदेश संयोजक मेघसिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि राज्य के सभी जिला केन्द्रों पर योग के कार्यक्रम हुए। जयपुर के सेवा सदन में विगत दो माह से चल रहे योग शिविर का भी समापन हुआ। **राष्ट्र सेविका समिति,** जोधपुर प्रांत की बहनों द्वारा 108 स्थानों पर सूर्य नमस्कार कर योग दिवस मनाया गया। **आदर्श विद्या मंदिर,** रानी (पाली) में विद्यार्थियों सहित सभी आचार्यों ने भी योग किया। श्री संचियालाल बैद माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर, रतनगढ़ में योगाचार्य अमित हरितवाल ने विद्यालय के विद्यार्थियों सहित शिक्षकों को योग कराया।

'स्वराज सिंधु-75' का विमोचन

स्वतंत्रता आंदोलन में सिंध के योगदान को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने हेतु **'राजस्थान सिंधी अकादमी'** द्वारा प्रकाशित 'स्वराज सिंधु-75' पुस्तक का विमोचन राजस्थान के राज्यपाल मा.कलराज मिश्र ने किया। पुस्तक में सिंध का इतिहास, सिन्धी वीरों, महिलाओं, संतों, आर्य समाज व युवाओं के योगदान के साथ-साथ बलिदानी हेमू कालाणी, संत कंवरराम के जीवन की विस्तृत व्याख्या की गई है। स्वतंता संग्राम के दौरान अंग्रेजों द्वारा प्रतिबंधित साहित्य का उल्लेख भी पुस्तक के सम्पादनकर्ता एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.सुरेश बबलानी ने किया है।

योग के साथ राष्ट्रयोग को प्रखर बनाने का समय- उत्तम स्वामी

आज धर्म को सही रूप में अंगीकार किए जाने की आवश्यकता है। हम जिस भी सम्प्रदाय से आते हों, उसके धर्म का पालन प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। यह चौराहों पर प्रदर्शित करने की वस्तु नहीं है। सार्वजनिक रूप से यदि प्रदर्शित करना है तो वह राष्ट्रधर्म होना चाहिए। उदयपुर के सुखाड़िया रंगमंच पर आयोजित योग व चिकित्सा शिविर के समापन अवसर पर यह बात बांसवाड़ा के ईश्वरचंद ब्रह्मचारी उपाख्य उत्तम स्वामी ने बीती 21 जून को कही। कार्यक्रम भारतीय संस्कृति अभ्युत्थान न्यास, **आरोग्य भारती व एनएमओ** के साझा प्रयासों से आयोजित हुआ था। योग शिक्षक व संघ के क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्री श्रीवर्धन के निर्देशन में विविध योग क्रियाकलापों का योग शिक्षकों ने प्रदर्शन किया।

चन्दीपुर में चिकित्सा शिविर

'राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद' व 'नेशनल मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन' की झालावाड़ इकाई के संयुक्त तत्वावधान में चन्दीपुर में निशुल्क चिकित्सा शिविर में नेत्र रोग, चर्म रोग, दन्त रोग, स्त्री रोग,अस्थि रोग, नाक-कान-गला रोग के विशेषज्ञों द्वारा 235 मरीजों का निशुल्क उपचार कर दवाइयां वितरित की गईं।

राम जानकी मंदिर की प्रतिष्ठा

राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद के प्रयास से कुशलगढ़ के अमलीपाड़ा गांव में नवनिर्मित राम जानकी मंदिर में रामद्वारा के संत रामप्रकाश जी महाराज के सान्निध्य में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच दर्शनीय प्रतिमाओं को प्रतिष्ठित किया गया।

वीरांगना का बलिदान दिवस

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद्, राजस्थान की ओर से 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान होने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का बीती 18 जून को जयपुर में बलिदान दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। श्रीमती ऊषा शेखावत ने रानी लक्ष्मीबाई के चित्र पर माल्यार्पण किया। कमाण्डर बनवारी लाल ने वीरांगना लक्ष्मीबाई के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला।

महाराजा दाहिरसेन ने राष्ट्र रक्षा के लिए परिवार का दिया बलिदान

जयपुर में पूज्य सिंधी सेंट्रल पंचायत की ओर से बीती 16 जून को महाराजा दाहिरसेन के शौर्य और पराक्रम को दर्शाती अश्वारूढ़ आदमकद प्रतिमा और स्मारक का लोकार्पण प्रतापनगर के कुंभा मार्ग, सेक्टर 17 स्थित 'सिंधु सागर' भवन में किया गया। इस अवसर पर गायक कलाकारों ने शहीदों की याद में स्वरांजलि कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ हाथोज धाम के बालमुकुंदाचार्य जी महाराज ने किया। संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री निंबाराम ने मुख्यवक्ता के रूप में कहा कि हमारी नई पीढ़ी को महाराजा दाहिरसेन जैसे महापुरुषों के बारे में जानकारी देना आवश्यक है। जानकारी हो कि महाराजा दाहिरसेन पहले हिंदू शासक थे जिन्होंने सिंध की पावन भूमि पर अरबों के आक्रमण का वीरता एवं साहस से डटकर मुकाबला किया। महाराजा दाहिरसेन की सेना ने अरबों के 14 आक्रमणों को विफल कर उन्हें पराजित किया। 712 ईस्वी में अरबों से युद्ध लड़ते हुए उनके दोनों पुत्रों और पुत्रियों ने प्राणों की आहुति दी एवं उनकी पत्नी ने मातृभूमि की रक्षा के लिए हजारों वीरांगनाओं के साथ अखंड भारत का प्रथम जौहर किया।

'भारतीय सिंधु सभा', जयपुर महानगर द्वारा 25 स्थानों पर उन्हें श्रद्धांजलि देकर याद किया गया। राजस्थान में 95 स्थानों पर बलिदान दिवस के कार्यक्रम हुए।

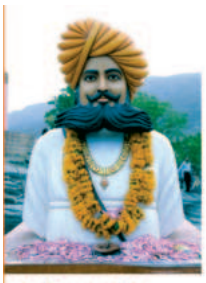

परमवीर राणा रतन सिंह

स्वातंत्र्य वीर रूपलो कोल्ही

परमवीर हेमू कालाणी

अजमेर में दाहिर सेन स्मारक पर स्वतंत्रता सेनानी रूपलो कोल्ही की मूर्ति का हुआ अनावरण

सिंधुपति महाराजा दाहिरसेन धर्मवीर, दानवीर व युद्धवीर थे। सिंधु संस्कृति के विकास में महती भूमिका का निर्वाह करने वाले हिंदू कुलरक्षक के रूप में उनकी ख्याति जन-जन में समाई हुई है। महाराजा दाहिरसेन ने युद्ध भूमि में राष्ट्र रक्षा के लिए स्वयं सहित परिवार का बलिदान दिया जिसे भुलाया नहीं जा सकता। आज हम प्रेरणा लें कि अपनी संस्कृति की सदैव रक्षा करेंगे। यह कहना है पूर्व सांसद श्री ओंकार सिंह लखावत का।

सिन्धुपति महाराजा दाहिरसेन के 1310 वें बलिदान दिवस (16 जून) के अवसर पर अजमेर स्थित महाराजा दाहिरसेन स्मारक पर देशभक्ति आधारित कार्यक्रम के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में बलिदान हुए 'रूपलो कोल्ही' की मूर्ति का अनावरण भी किया गया। श्री लखावत ने कहा कि सिंध व हिंद में कहीं भी ऐसा स्मारक नहीं है जहाँ तीनों शहीदों (परमवीर राणा रतन सिंह, हेमू कालाणी व रूपलो कोल्ही) की मूर्ति एक साथ हो। यहां आकर सभी के मन में देशभक्ति का भाव जागृत होता है। बिना सिंध के हिंद अधूरा है। महापुरुषों में महाराजा दाहिरसेन के बिना इतिहास की चर्चा अधूरी है।

कार्यक्रम में म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर के कुलपति प्रो. अनिल शुक्ला ने कहा कि महाराजा दाहिरसेन, सम्राट पृथ्वीराज चौहान व स्वतंत्रता संग्राम के महापुरुषों के जीवन किताबों के हिस्सा अवश्य बने और हम प्रयास करेगें कि विश्वविद्यालय में गौरव के विषय रहे महापुरुषों पर शोध हो। उन्होंने यह भी कहा कि पत्थर पर लिखा हुआ इतिहास कभी मिट नहीं सकता। बलिदानी रूपलो कोल्ही के परिवार से आए ईश्वर रामसिंह ठाकुर कोली (अहमदाबाद) व जोधपुर से आए मीरखां कोल्ही सहित समाज के बंधुओं ने कोल्ही के जीवन पर अपने विचार प्रकट किए।

बलिदानी रूपलो कोल्ही

स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान हुए रूपलो कोल्ही का जन्म सिन्ध के नगरपारकर जिले में हुआ। उन्हें तीर-कमानों, भालों और घातक हथियारों को चलाने की महारत हासिल थी। 15 अप्रैल, 1859 को रूपलो और उनके साथियों ने अंग्रेजों के खिलाफ नगरपारकर (सिंध, पाकिस्तान) के हैड क्वार्टर पर हमला कर सरकारी खजाने को लूटा। इसकी जानकारी अंग्रेज आकाओं को हैदराबाद (सिंध, पाकिस्तान) में दी गई। हैदराबाद छावनी से एक टुकड़ी नगरपारकर की ओर रवाना हुई। पुराने हथियार अंग्रेजों की बंदूको के सामने अधिक समय तक टिक नहीं सके। इसलिए सभी पहाड़ी किले चंदन गढ़ में चले गए। कुछ विश्वासघाती सरदारों की मदद से अंग्रेजों ने किले को तोपों से उड़ा दिया। रूपलो कोल्ही उसी दौरान अपने साथियों को खाने का सामान पहुंचाने में लगे थे। अंग्रेजों ने रूपलो कोल्ही व उनके साथियों को चारों तरफ से घेरकर गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तारी के बाद उन्हें धन व जागीर का लालच दिया गया। आम जन के सामने उनके हाथों की अंगुलियों पर रूई लपेट तेल डाल कर आग लगाई गई। फिर भी उन्होंने फिरंगियों को अपने साथियों का पता-ठिकाना नहीं बताया। बाद में रूपलो और उनके गिरफ्तार साथियों पर बगावत का मुकदमा चला कर भारत माता के इस वीर सपूत को 22 अगस्त, 1859 को फांसी दे दी गई।

नूपुर तूने सच क्यों बोला?

● **ब्रजराज राजावत,** जयपुर

उफनी भीड़
इबादतगाह से
'भाईचारे' के पत्थर बरसे
सहमा समाज
बंकर में दुबका
कानूनों के
कपाल बिखरे
सड़कों के वे हुए शहंशाह
शासन भय से हुआ
मौन सा

'सर कलम' के नारे गूंजे
संविधानी मर्यादा
फंदे पर झूली
बेबस पुतला
भय बरसाए

डरे शहर-आसमां बोले
तू क्यों बोली
उनकी पोथी की सच्चाई
तेरे देवों की कैसी गरिमा
तेरी आस्था पर
वो थूकेंगे
'हर' महिमा को
हां नोचेंगे
उनके दीन से
सत्ता सहमे
अपने धर्म को
मन में रखती
वो बोले तब
मुंह को सिलती

रंगश्री हुसैन नहीं तू
नग्न देवियां अंकित करके
सृजन श्रेष्ठ की शोभा पाएं
जाने कितने 'कतर' विश्व में
पलक पांवड़े लिए खड़े थे

नूपुर तूने
सच क्यों बोला?
भारत बेबस
भारत में ही
हर कोने में
'कतर' खड़े हैं...
हर कोने में
कतर खड़े हैं...

(लेखक-कवि एवं चित्रकार हैं)

विश्व में संस्कृत के प्रति बढ़ रहा है आकर्षण

संस्कृत भारती का संभाषण शिविर सम्पन्न

विश्व में संस्कृत के प्रति चाह निरंतर बढ़ रही है। संस्कृत पोषित भारतीय संस्कृति विश्व में ग्राह्य है। विश्व के 40 देशों के 254 विश्वविद्यालयों में संस्कृत विभाग कार्य कर रहे हैं जिसमें अमेरिका,रूस,जापान,जर्मनी व फ्रांस शामिल है। संस्कृत विश्व की पहली ऐसी भाषा है जिसमें 43 लाख पांडुलिपियाँ मौजूद हैं, जिसमें से केवल 45 हजार ही प्रकाशित हुई हैं। यह कहना है संस्कृत भारती के अ.भा. संगठन मंत्री श्री दिनेश कामत का। वे अजमेर में राजस्थान क्षेत्र के संस्कृत संभाषण प्रशिक्षण शिविर के समापन पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने संस्कृत में शोध पर भी बल दिया। संस्कृत भारती द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि यह संस्था संस्कृत के पुनर्जीवनोत्थान के लिए संस्कृत संभाषण का कार्य संपूर्ण देश-विदेश में कर रही है। पाँच लाख संस्कृत शिक्षक व प्रशिक्षक देश में संस्कृत भाषा के उत्थान के लिए संस्कृत भारती के माध्यम से निरंतर प्रयासरत हैं।

संस्कृत भारती द्वारा राजस्थान क्षेत्र के तीनों प्रांतों का सम्मिलित प्रशिक्षण वर्ग बीती 31 मई से 12 जून तक अजमेर के शहीद अविनाश माहेश्वरी आदर्श विद्या मंदिर में लगा था। सांसद भगीरथ चौधरी ने संस्कृत को भारत की आत्मा बताते हुए वेदों-पुराणों की इस भाषा को सभी भाषाओं की जननी बताया। वर्ग में 172 शिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

आओ संस्कृत सीखें - 5

- **आइए/ पधारिए।** – आगच्छतु।
- **बैठिये।** – उपविशतु।
- **फिर मिलेंगे।** – पुनः मिलामः।
- **समझे?** – ज्ञातम्?
- **ठीक है/जी हाँ/ जी।** – अस्तु।

गीता दर्शन

श्रीकृष्ण कहते हैं–

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

(2/63)

मन की इच्छाएं पूरी न होने पर क्रोध उत्पन्न हो जाता है। क्रोध के उत्पन्न होने पर मनुष्य मूढ़ हो जाता अर्थात् वह ठीक से कुछ समझ नहीं पाता। मूढ़ता से उसकी स्मृति नष्ट हो जाती है, स्मृति के नष्ट हो जाने से उसकी बुद्धि का नाश हो जाता है। बुद्धि नाश से मनुष्य का स्वयं का नाश हो जाता है। अतः क्रोध से बचना चाहिए।

जो रमने के लिए विवश कर दे वह 'राम'

'राम' शब्द में दो अर्थ व्यंजित हैं। सुखद होना और ठहर जाना। जैसे अपने मार्ग से भटका हुआ कोई पथिक किसी सुरम्य स्थान को देखकर ठहर जाता है। हमने सुखद ठहराव का अर्थ देने वाले जितने भी शब्द गढ़े, सभी में 'राम' अंतर्निहित है, यथा आराम, विराम, विश्राम, अभिराम, उपराम, ग्राम। जो रमने के लिए विवश कर दे, वह 'राम'

जीवन की आपाधापी में पड़ा अशांत मन जिस आनंददायक गंतव्य की सतत तलाश में है, वह गंतव्य है 'राम'। भारतीय मन हर स्थिति में 'राम' को साक्षी बनाने का आदी है।

दुःख में – हे राम
पीड़ा में – अरे राम
लज्जा में – हाय राम
अशुभ में – अरे राम राम
अभिवादन में – राम राम
शपथ में – रामदुहाई
अज्ञानता में – राम जाने
अनिश्चितता में – राम भरोसे
अचूकता के लिए – रामबाण
मृत्यु के लिए – रामनाम सत्य
सुशासन के लिए – रामराज्य

जैसी अभिव्यक्तियां पग-पग पर 'राम' को साथ खड़ा करतीं हैं। 'राम' भी इतने सरल हैं कि हर जगह खड़े हो जाते हैं। हर भारतीय उन पर अपना अधिकार मानता है। जिसका कोई नहीं उसके लिए 'राम' हैं- निर्बल के बल 'राम'। असंख्य बार देखी-सुनी-पढ़ी जा चुकी रामकथा का आकर्षण कभी नहीं खोता। 'राम' पुनर्नवा हैं। हमारे भीतर जो कुछ भी अच्छा है, वह 'राम' है। जो 'शाश्वत' है, वह 'राम' हैं।

सब-कुछ लुट जाने के बाद जो बचा रह जाता है, वही तो 'राम' है। घोर निराशा के बीच जो उठ खड़ा होता है, वह भी 'राम' ही है।

कारगिल विजय दिवस

26 जुलाई

भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए 'ऑपरेशन विजय'को सफलतापूर्वक अंजाम देकर जम्मू-कश्मीर की कारगिल पहाड़ियों को पाकिस्तानी घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराया। युद्ध अधिकारिक रूप से 26 जुलाई, 1999 को समाप्त हुआ, कारगिल युद्ध नायकों के सम्मान में तब से हर वर्ष 26 जुलाई को 'कारगिल विजय दिवस' मनाया जाता है।कारगिल जिले में नियंत्रण रेखा पर लड़े गए इस युद्ध में 550 भारतीय जवानों ने अपने जीवन का बलिदान दिया और 1400 जवान घायल हुए। युद्ध 60 दिन तक चला था। यह दिन उन वीर शहीदों को याद करने का है जिन्होंने अपना आज हमारे कल के लिए बलिदान कर दिया।

श्रद्धांजलि

संस्कार भारती के संरक्षक

बाबा योगेन्द्र का देहावसान

कला के क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना लाने का उद्देश्य सामने रखकर संस्कार भारती की स्थापना की गई थी। संस्कार भारती आज इस क्षेत्र की अग्रणी संस्था है। संस्कार भारती के संरक्षक एवं पद्मश्री बाबा योगेन्द्र का बीती 10 जून को प्रातः 8:00 बजे लखनऊ के डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में देहावसान हो गया। वे 98 वर्ष के थे। संघ प्रचारक नानाजी देशमुख की प्रेरणा से संघ के प्रचारक बन योगेन्द्र जी ने गोरखपुर, प्रयाग, बरेली, बदायूं और सीतापुर में संघ कार्य को गति प्रदान की। वर्ष 1981 में जब संस्कार भारती संगठन बना तो बाबा योगेन्द्र को अ.भा.संगठन मंत्री बनाकर कला साधकों के मन में राष्ट्र भावना के जागरण का कार्य सौंपा गया।

कला के क्षेत्र में आपके विशेष योगदान को देखते हुए वर्ष 2018 में भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया। 'भाऊराव देवरस सेवा सम्मान' तथा 'अहिल्याबाई होल्कर' जैसे अनेक राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत बाबा योगेन्द्र को पाथेय कण परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

राजस्थान के संघ शिक्षा वर्गों का समापन

राजस्थान के संघ शिक्षा वर्गों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी, किसान , व्यवसायी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। चिकित्सक, अभियंता तथा अधिवक्ता भी पर्याप्त संख्या में थे। जून के प्रथम सप्ताह में सम्पन्न हुए विभिन्न वर्गों का प्राप्त विवरण –

शिक्षा वर्ग स्थान	शिक्षार्थी संख्या	स्थानों से	विशेष
अलवर	338	189	स्कूल विद्यार्थी
जामडोली (जयपुर)	265	147	किसान 45, डॉक्टर्स 07, अधिवक्ता 12 व अन्य
झुंझुनू	362	226	कॉलेज विद्यार्थी 156, किसान 20, अधिवक्ता 22, इंजीनियर 6, संत 1व अन्य
तिंवरी (जोधपुर)	184	125	किसान 18, व्यवसायी 83 व अन्य
नागौर (व्यवसायी वर्ग)	166	111	मजदूर 02, किसान 17 व अन्य
नागौर	608	321	स्कूल,कॉलेज विद्यार्थी
बीकानेर (द्वितीय वर्ष)	317	111	कॉलेज विद्यार्थी 108 व्यवसायी, किसान व मजदूर 87 व अन्य
बूंदी	259	159	स्कूल विद्यार्थी
चित्तौड़	597	224	किसान 12, कर्मचारी 35 शेष कॉलेज विद्यार्थी
घोष वर्ग – दौसा (198), नागौर (77), बूंदी (52)			

हमारे सांस्कृतिक पर्व

हरियाली अमावस्या

श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को हरियाली अमावस्या (इस बार 28 जुलाई) के नाम से जाना जाता है। नारद पुराण के अनुसार इस दिन पितरों की आत्मा की शांति के लिए दान, पूजा-पाठ, ब्राह्मणों को भोजन आदि कराना चाहिए। तुलसी और पीपल की विशेष रूप से इस दिन पूजा की जाती है। धर्मशास्त्रों के अनुसार श्रावण मास में आने के कारण इस दिन भगवान शिव का विशेष पूजन करने का भी विधान है। पूजन के पश्चात् नदी व जलाशयों के किनारे (अथवा पार्क या मंदिर में) आम, पीपल, वट, नीम, केला, नींबू व तुलसी के पौधे रोपने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है। इस प्रकार यह पर्व प्रकृति को हरी-भरी बनाने का संदेश देता है। पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन को भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व दिया गया है।

यह पर्व राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब तथा मध्य प्रदेश के मालवा व निमाड़ क्षेत्र में विशेष रूप से मनाया जाता है। ●

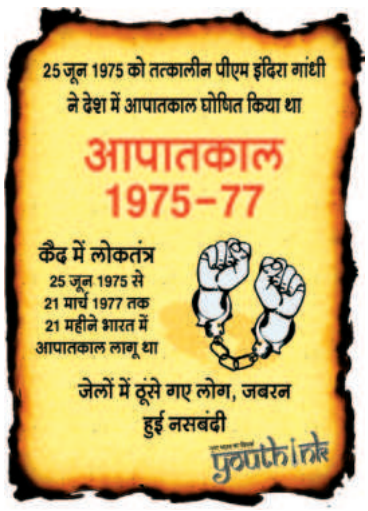

विशेषांक में दें विज्ञापन

‘ स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर ’

पाथेय कण ‘पाक्षिक’ पत्रिका गत 38 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रही है। पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के विकास का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान में पाथेय कण की प्रसार संख्या 1 लाख 10 हजार है। यह राजस्थान के 20 हजार गांवों-शहरों के साथ ही सम्पूर्ण देश और विदेश में भी लाखों पाठकों द्वारा पढ़ा जा रहा है।

विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषांक प्रकाशन की अपनी परम्परा के अनुरूप पाथेय कण आगामी अगस्त 2022 में ‘स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर’ विषय पर महत्वपूर्ण सामग्री के साथ संग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है।

अतः आपसे निवेदन है कि अपने कार्यालय/संस्थान/व्यवसाय/संगठन/विभाग आदि का विज्ञापन देकर इस अवसर का लाभ उठाएं।

विज्ञापन दरें

आवरण पृष्ठ अंतिम(रंगीन)	₹ 3,00,000/-
आवरण पृष्ठ 2 (रंगीन)	₹ 2,00,000/-
आवरण पृष्ठ 3 (रंगीन)	₹ 2,00,000/-
रंगीन पूर्ण पृष्ठ (अन्दर)	₹ 1,00,000/-
रंगीन आधा पृष्ठ	₹ 50,000/-
रंगीन चौथाई पृष्ठ	₹ 25,000/-
शुभकामना संदेश	₹ 6,000/-

खाता नाम : **पाथेय कण संस्थान**
बैंक ऑफ बड़ौदा, मालवीय नगर, जयपुर
A/c No. 01130100007568
IFSC : BARB0MALJAI
बैंक ड्राफ्ट/ चैक **‘पाथेय कण संस्थान’** के नाम से भेजें।

स्वास्थ्य टिप्स

आधा चम्मच सूखा अदरक पाउडर लें और उसमें एक चुटकी हींग और थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर एक कप गरम पानी में डालकर पीने से गैस की समस्या में आराम मिलता है।

ब्रोशर विमोचन

जामडोली में संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख श्री स्वांत रंजन, प्रांत संघचालक सरदार महेन्द्र सिंह मग्गो तथा प्रांत कार्यवाह श्री गेंदालाल ज्ञान गंगा प्रकाशन के ब्रोशर का विमोचन करते हुए। (9 जून)

पुस्तक विमोचन

‘हिंद की चादर : श्री गुरु तेगबहादुर जी’ (लेखक-श्री हनुमान सिंह) की पुस्तक का विमोचन करते अतिथिगण। (पुष्कर, 20 जून)

व्हील चेयर्स एवं बेंचें भेंट

सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर को सेवा भारती द्वारा 15 व्हील चेयर्स एवं 10 बेंचें भेंट करते क्षेत्र सेवा प्रमुख शिवलहरी जी तथा विशाल जी। अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ.जगदीश मोदी भी उपस्थित रहे। (16 जून)

माँ हीराबेन के 100वें जन्मदिन पर गांधी नगर पहुँच कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने माँ के पैर धोकर लिया आशीर्वाद। (18 जून)

बोध कथा

अचूक निशाना

स्वामी विवेकानन्द भ्रमण पर निकले हुए थे। नदी के पास से गुजरते हुए उन्होंने कुछ लड़कों को देखा। वे सभी पुल पर खड़े थे और वहां से नदी के पानी में बहते हुए अंडों के छिलकों पर बंदूक से निशाना लगाने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन किसी भी लड़के का एक भी निशाना सही नहीं लग रहा था। यह देख वे उन लड़कों के पास गए और उनसे बंदूक लेकर खुद निशाना लगाने लगे। उन्होंने पहला निशाना लगाया। वो सीधे जाकर अंडों के छिलकों पर लगा। फिर उन्होंने दूसरा निशाना लगाया, वो भी सटीक लगा। एक के बाद एक उन्होंने बारह निशाने लगाए। सभी निशाने बिल्कुल सही जगह जाकर लगे।

यह देख सभी लड़के आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने स्वामी जी से पूछा, ''स्वामीजी, आप इतना सटीक निशाना कैसे लगा पाते हैं?'' इस पर स्वामी विवेकानन्द ने उत्तर दिया, ''असंभव कुछ भी नहीं है। तुम जो भी काम कर रहे हो, अपना दिमाग पूरी तरह से बस उसी एक काम में लगा दो। यदि पाठ पढ़ रहे हो तो सिर्फ पाठ के बारे में सोचो, यदि निशाना साध रहे हो तो अपना पूरा ध्यान लक्ष्य पर रखो। इस तरह तुम कभी भी नहीं चूकोगे।''

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -22)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )

4.( ) 5.( ) 6.( )

7.( ) 8.( ) 9. ( )

10.( )

नाम .....

पिता का नाम.....

उम्र ..... पूर्ण पता .....

.....

.....पिन.....

मोबाइल नं. .....

बाल प्रश्नोत्तरी -22

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 16 जून का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि – 20 जुलाई, 2022**

1. अकबर और महाराणा प्रताप के मध्य हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध कब हुआ था?
(क) 1576 (ख) 1575 (ग) 1577 (घ) 1580

2. मेवाड़ की जनता कुंवर प्रताप को किस नाम से सम्बोधित करती थी?
(क) कीका (ख) काका (ग) मिका (घ) राणा

3. महाराणा प्रताप की समाधि किस स्थान पर बनी हुई है?
(क) सराड़ा (ख) चावंड (ग) डेकली (घ) बन्दोली

4. वीरांगना दुर्गावती के एक मात्र पुत्र का नाम क्या था?
(क) रामनारायण (ख) नारायण (ग) नमोनारायण (घ) वीरनारायण

5. बाज बहादुर को परास्त कर किस राज्य को अकबर ने अपने अधीन किया था?
(क) मालवा (ख) मंडला (ग) कलिंजर (घ) बरेला

6. गोशाला के लिए 6 बीघा जमीन दान करने वाले कोजसिंह किस जिले से हैं?
(क) बीकानेर (ख) जालौर (ग) जोधपुर (घ) बाड़मेर

7. कोटा की गोशालाओं द्वारा फ्लेवर्ड गोमूत्र कितने फ्लेवर में तैयार किया जा रहा है?
(क) चार (ख) पाँच (ग) छः (घ) सात

8. राममंदिर के गर्भगृह के लिए शिला पूजन किसके द्वारा किया गया?
(क) योगी आदित्यनाथ (ख) योगी उपेन्द्रनाथ (ग) योगी बालनाथ (घ) योगी अतेन्द्रनाथ

9. फिल्म 'सम्राट पृथ्वीराज' में पृथ्वीराज के परममित्र चंदबरदाई की भूमिका किसने निभाई है?
(क) अक्षय कुमार (ख) आशुतोष राणा (ग) सोनू सूद (घ) संजय दत्त

10. विश्व जनसंख्या दिवस प्रथम बार कब मनाया गया?
(क) 1989 (ख) 1980 (ग) 1985 (घ) 1984

बाल प्रश्नोत्तरी -19 के परिणाम

पाखी

लीला

अमन

राखी

मिलिन्द

1. पाखी, मुहाना मंडी रोड, जयपुर **2. लीला जाखड़, सनावड़ा, बाड़मेर**
3. अमन योगी, प्रेम नगर तृतीय, कोटा **4. राखी प्रजापति, निवाई, टोंक**
5. मिलिन्द सैनी, महुआ रोड, दौसा 6. माही, मानसरोवर, जयपुर
7. नन्दनी, मनोहर थाना, झालावाड़ 8. गणेश बागड़ा, वीकेआई, जयपुर
9. ऐश्वर्या, कुराबड़, उदयपुर 10. जानवी खारीवाल, बड़ामहुआ, भीलवाड़ा

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर 1.(क) 2.(ख) 3.(ग) 4.(क) 6.(ख)7.(घ) 8.(क) 9.(ख) 10.(क)

संपादकीय

1 जून के अंक में 'कौन है यह मुस्लिम पक्ष?' संपादकीय के लिए बधाई। लेख की वास्तविकता को एक वर्ग स्वीकार भी करता है परन्तु आज भी पुनः क्रियान्वित की दिशा में भय पूर्व की भांति ही है, यदि इस भय का कोई समाधान हो तो बहुत कुछ बदलाव की संभावना निश्चित रूप से सामने आएगी।

–अजय गोयल,
ajaygoel963@gmail.com

जानकारी युक्त पाथेय

जून माह की पाथेय कण प्राप्त हुई। हर महीने की तरह इस माह भी इस पुस्तक ने मुझे अतीत और वर्तमान परिस्थिति की जानकारी दी। 'विश्व तम्बाकू निषेध दिवस' व 'विश्व पर्यावरण दिवस' की जानकारी अंक में पढ़ी। इन अवसरों से लोगों को जागरुक करने की अत्यंत आवश्यकता है।

–गौरव कश्यप, कोटा

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- राजनीतिक सर्वे नहीं करता संघ
https://patheykan.com/?p=16232
- आपातकाल : सत्ता प्रायोजित पुलिसिया कहर का दौर
https://patheykan.com/?p=16226
- 26वीं सिंधु दर्शन तीर्थयात्रा : लेह लद्दाख में शुभारंभ
https://patheykan.com/?p=16220

पहली बार पढ़ा

पाथेय कण का 1 जून का अंक प्राप्त हुआ। मेरे पिताजी इसके नियमित पाठक हैं। मैंने इसे पहली बार पढ़ा। अंक में 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस'(21 जून) पर विशेष लेख पढ़कर आनंद का अनुभव हुआ। योगाभ्यास के सामान्य निर्देशों को पढ़कर योग के प्रति सभी भ्रम दूर हो गए। स्वाधीनता का अमृत महोत्सव (स्वराज-75) में 'राजस्थान के जतिनदास बालमुकुंद बिस्सा' की बलिदान गाथा पढ़कर मन गौरवान्वित महसूस कर रहा है। बाल प्रश्नोत्तरी में जिस प्रकार के प्रश्न आप दे रहे हैं उनसे ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ बाल मित्रों के मन पर भारतीय इतिहास व संस्कृति की अमिट छाप भी बन रही है।

–सुनील पारीक, पावटा, जयपुर

वास्तविकता

1 मई पाथेय कण में सम्पादकीय 'इतिहास के सच को स्वीकारना आवश्यक' हिंदू जनमानस को सोचने पर विवश करता है। 1945 के चुनावों में मुसलमानों द्वारा मुस्लिम लीग के समर्थन में वोट देकर पृथक राष्ट्र की परिकल्पना को साकार करने में जिन्ना को अपना समर्थन देना हो या कश्मीर में हुए 1990-1992 में हजारों हिंदुओं का नरसंहार हो या वर्तमान समय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हो रही पत्थरबाजी और भारत विरोधी नारे लगाने की घटनाएं हो, ये भारत के बहुसंख्यक समाज(हिंदुओं)को इतिहास और वर्तमान से सीखने को प्रेरित करता है। भारत के हिन्दू समाज को जाग जाना चाहिए, वर्तमान में चल रहा साम्प्रदायिक (गैंग) उन्माद इस सहिष्णु देश को एक बार पुनः रक्तरंजित कर इसके टुकड़े करने पर आमादा है।

भारत की राष्ट्रवादी सरकार के कारण उनके इरादे सफल नहीं हो पा रहे पर जब ये सरकार (दुर्भाग्यवश) यदि सत्ता में नहीं रही तब क्या? अतः हिन्दुओं को वास्तविकता से मुँह न मोड़ कर राष्ट्रवादियों का सहयोग करना चाहिए।

–नीलेश पाटीदार, चिखली, डूंगरपुर

योगाभ्यास के अच्छे परिणाम

1जून के अंक में प्रकाशित 'समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है योग' शीर्षक से ज्ञानवर्धक जानकारी मिली, जो निश्चित रूप से लाभदायक सिद्ध होगी। 'बालमुकुंद बिस्सा' से संबंधित जानकारी अच्छी लगी।

'स्वरोजगार को बढ़ावा देने वाला संगठन 'लघु उद्योग भारती' के अंतर्गत महिलाओं की स्थिति सुधारने का प्रयास अच्छा लगा। 31 लाख रुपये जुटाकर निर्धन बेटी की शादी, 'किन्नर बबीता' द्वारा 50 लाख देकर मंदिर बनवाना, सिख परिवार द्वारा जाटव बेटी का विवाह, रघुनाथजी द्वारा सेवा भारती को 17 लाख का दान देना प्रेरणादायी समाचार है। बोधकथा 'संकल्प की शक्ति' से भी निराश हुए बच्चे उत्साहित होंगे। अंक में सामग्री पाठकों के लिए उपयुक्त एवं लाभदायक सिद्ध होगी।

–बृजभूषण शर्मा,
डी-274,जवाहर नगर,भरतपुर

विशेषांक के लिए लेख आमंत्रित

'स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर'

शांतिपूर्ण सत्याग्रह से लेकर सशस्त्र संघर्ष तक सभी माध्यमों से स्वाधीनता का संघर्ष चला था। यह आंदोलन 'स्व' के भाव से प्रेरित था- स्वराज्य, स्वधर्म और स्वदेशी के लिए लाखों लोगों ने बलिदान दिया। इसके साथ ही समाज को शक्तिशाली बनाने तथा इसमें आई विकृतियों को दूर कर सामाजिक पुनर्रचना का कार्य भी जारी था। 15 अगस्त, 1947 को मिली थी स्वाधीनता। 'स्व-तंत्र-ता' की ओर हमारी यात्रा जारी है। इस यात्रा के दौरान कई क्षेत्रों में भारत की पहचान विश्व में बनी है। इस सम्पूर्ण परिदृश्य के अज्ञात या कम ज्ञात पहलुओं को समेटने का एक विनम्र प्रयास इस विशेषांक के माध्यम से किया जाना है।

विशेषांक में प्रकाशनार्थ आलेख /कार्टून/ चित्र/कविता आदि आमंत्रित हैं।

- प्रकाशन सामग्री भेजने की अंतिम तिथि - 15 जुलाई, 2022
- विशेषांक में प्रकाशन हेतु एक संभावित विषय सूची बनाई गई है। आप संपादक से संपर्क कर उसे प्राप्त कर सकते हैं। (मो. 9414312288)

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस 27

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

सुभाष बाबू के तूफानी दौरों ने देशभर में क्रांति की मशाल जला दी... उन्होंने घोषणा कर दी कि 2 जुलाई, 1940 को कलकत्ता में स्थापित 150 वर्ष पुरानी गुलामी की प्रतीक 'होलवेल' की मूर्ति को तोड़ेंगे... सुभाष कलकत्ता पहुँचे तो...

स्वाधीनता के लिए आंदोलित जनमानस नेतृत्वविहीन हो गया... देश में निराशा छा गयी। उधर ब्रिटिश सत्ता ने चैन की सांस ली... कांग्रेस व गांधी जी ने सुभाष की गिरफ्तारी की आलोचना तक नहीं की... सुभाष को कांग्रेस के इस रवैये पर बहुत दुःख हुआ...

रिहाई के बाद उनका उत्साहपूर्ण स्वागत हुआ... हजारों समर्थक अपने प्रिय नेता को देखने व सुनने उमड़े किंतु...

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
1-15 जुलाई, 2022
(26 जून को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

श्रावण कृ.3 से श्रावण शु.3 तक, वि.सं.-2079
(16 से 31 जुलाई, 2022)

जन्म दिवस

श्रावण कृ.9 (22 जुलाई) – आठवें गुरु हरकिशनजी जयंती (प्राचीन मत)
23 जुलाई (1856) – लोकमान्य तिलक जयंती
23 जुलाई (1906) – चन्द्रशेखर आजाद जयंती
31 जुलाई (1880) – मुंशी प्रेमचन्द जयंती

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

20 जुलाई (1965) – बटुकेश्वर दत्त की पुण्यतिथि
24 जुलाई (1824) – कुंवर चैन सिंह का बलिदान
26 जुलाई (1972) – बाबा साहब आप्टे की पुण्यतिथि
27 जुलाई (1939) – हैदराबाद सत्याग्रह में शांतिप्रकाश की शहादत
27 जुलाई (2015) – डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि
31 जुलाई (1940) – सरदार उधम सिंह की शहादत

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

26 जुलाई (1999) – कारगिल विजय दिवस

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

18 जुलाई – नाग पंचमी
28 जुलाई – हरियाली अमावस्या

पंचांग- श्रावण (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द-5124, वि.सं.-2079, शाके-1944
(14 से 28 जुलाई, 2022 तक)

पंचक प्रारम्भ -15 जुलाई (प्रातः 4.17 बजे), **चतुर्थी व्रत**-16 जुलाई, **नाग पंचमी** -18 जुलाई (श्रावण प्रथम वन सोमवार), **पंचक समाप्त** -20 जुलाई (दोपहर 12.50 बजे), **कामिका एकादशी व्रत, रोहिणी व्रत (जैन)**-24 जुलाई, **सोम प्रदोष व्रत**-25 जुलाई, **देवपितृकार्य अमावस्या, सरस माधुरी जयंती, हरियाली अमावस्या**-28 जुलाई

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 14-15 जुलाई **मकर** राशि में, 16 से 18 जुलाई **कुंभ** राशि में, 19-20 जुलाई **मीन** राशि में, 21-22 जुलाई **मेष** राशि में, 23 से 25 जुलाई उच्च की राशि **वृष** में, 26-27 जुलाई **मिथुन** राशि में तथा 28 जुलाई को स्वराशि **कर्क** में गोचर करेंगे।

श्रावण कृष्ण पक्ष में **गुरु**, **शुक्र,मंगल** व **वक्री शनि** यथावत मीन, मिथुन, मेष व मकर राशि में स्थित रहेंगे। इसी बीच गुरु 28 जुलाई की रात 2.10 बजे मीन राशि में रहते हुए वक्री होंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी मेष व तुला राशि में बने रहेंगे। **बुध** 16 जुलाई को रात्रि 12.10 बजे तथा **सूर्य** 16 जुलाई को रात्रि 10.57 बजे मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश करेंगे।

शत शत नमन

जन्मदिवस

उपन्यास सम्राट
मुंशी प्रेमचन्द
31 जुलाई

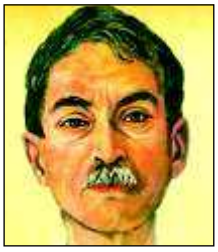

(1880-1936)

आठवें गुरु
गुरु हरकिशन जी
श्रावण कृ.9 (22 जुलाई)

(1656-1664)

पुण्यतिथि

भारत के पूर्व राष्ट्रपति
डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम
27 जुलाई

(1931-2015)

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है ?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिए जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आपने जनरल डायर को लंदन जाकर गोली मारी थी।
- आपके जीवन पर एक फिल्म भी बनी है।
- उत्तराखण्ड के एक जिले का नाम आपके नाम पर रखा गया है।

उत्तर : सरदार उधम सिंह

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
संपादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 जुलाई, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में _____
_____
_____